एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 02, अंक: 05 (सितम्बर-अक्टूबर, 2022)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

मधुमक्खी पालन योजना का लाभ उठाएं

(*सुभम कुमार)
सहायक प्रोफेसर, कृषि विभाग, जे .बी.आई.टी. कॉलेज ऑफ अप्लाइड साइंसेज, देहरादून
*संवादी लेखक का ईमेल पता: subhamkumarpp12@gmail.com

मधुमक्खी पालन को वैज्ञानिक भाषा मे एपीकल्चर कहा जाता है | मधुमक्खीयों फूलों के रस को शहद में बदल देती है। तथा उन्हें छतों में जमा करती है। जंगलों से मधु एकत्र करने की परंपरा लंबे समय से लुप्त हो रही है। बाजार में शहद और इसके उत्पाद बढ़ती मांग के कारण मधुमक्खी पालन अब एक लाभदायक और आकर्षक उद्यम के रूप में स्थापित हो गया है। किसानों की आय को दोगुना करने के लिए एवं बेरोजगार लोगो को रोजगार देने के लिए पालन के लिए सरकार लगातार किसानों को प्रोत्साहित कर रही है | मधुमक्खी पालन को बढ़ावा देने के लिए केंद्र सरकार द्वारा आत्मनिर्भर भारत के अंतर्गत 500 करोड़ रुपए देने का प्रावधान किया गया है। वर्तमान समय में कृषि के साथ ही बागवानी फसलों पर अधिक ध्यान दे रहे है, जबकि कृषि योग्य भूमि निरंतर घटती जा रही है | ऐसे में मधुमक्खी पालन किसानों की अतिरिक्त आय का एक अच्छा स्त्रोत है | दरअसल मधुमक्खी पालन एक ऐसा व्यवसाय है, जिसे हर वर्ग के किसान और व्यवसाय करनें वाले व्यक्ति आसानी से कर सकते है |

मधुमक्खी पालन प्रशिक्षण : हमारे देश में मुख्य रूप से इटालियन मधुमक्खी (ऐपीस-मेलीफेरा) का पालन किया जाता है | यह स्वाभाव से शांत होनें के साथ कारण इसका पालन करना काफी आसान होता है | एपिस इंडिका यह संपूर्ण भारत में पाई जाती है। तथा भारतीय मोना मक्खी कहलाती है यह सारंग से कुछ छोटी लगभग 15 मिली मीटर लंबी होती है। यह अंधेरे स्थानों पर रहना पसंद करती है। एक ही स्थान पर एक एक फुट परिमाण के एक से अधिक छत्ते बनाती है। इनके छत्ते से लगभग 34 किलोग्राम शहद प्राप्त होता है। यह शांत स्वभाव की मक्खी है अतः आसानी से पाली जा सकती है। मधुमक्खी पालन में 3 प्रकार की मधुमक्खीयों की आवश्यकता होती है | पहली रानी मधुमक्खी जो 24 घंटे में लगभग 800-1500 अंडे देती है। दुसरे प्रकार की मक्खी को श्रमिक मक्खी कहते है, जो अंडे से निकले बच्चों को खाना खिलानें एव शहद बनानें का कार्य करती है। मधुमाखी पालन में श्रमिक मक्खियों की संख्या एक डब्बे में लगभग 25-30 हज़ार होनी चाहिए और तीसरी ड्रॉन अथवा नर जो रानी मक्खी को गर्भ धारण करनें का कार्य करती है | एक डिब्बे में इनकी संख्या लगभग 300-400 के बीच होनी चाहिए।

मधुमक्खी पालन की शुरुआत: मधुमक्खी पालन की शुरुआत दो प्रकार से की जा सकती है व्यवसायिक तौर पर मधुमक्खी पालन करने के लिए शुरुआत में 50 मधुमक्खी के बक्सों के साथ एवं इकलॉजिकल फार्मिंग के साथ-साथ मधुमक्खी पालन को 10 बॉक्स के साथ किया जा सकता है।

मधुमक्खी पालन से लाभ: मधुमक्खी पालन व्यवसाय शुरू करनें के लिए बहुत ही कम समय में अधिक लाभ प्राप्त कर सकते है। एक बॉक्स से 1 साल में कम से कम 10 किलो एवं अधिकतम 40 किलो शहद प्राप्त होता है तथा साथ ही 1 से 2 किलो वैक्स भी प्राप्त होता है एक किलो रो शहद (बिना प्रोसेसिंग वाला शहद) की कीमत 125-130 रुपए किलो होती है इस रो शहद में कई प्रकार की अशुद्धियां पाई जाती है जिसकों प्रोसेसिंग के माध्यम से हटाकर शहद की गुणवत्ता को बढ़ाया जा सकता है एवं पैकेजिंग कर इसे 350 से 400 किलो बाजार में बेचा जा सकता है तथा 1 किलो वैक्स की कीमत 800 से 1500 रुपए तक होती है। मधुमक्खी से शहद और मोम के अलावा प्रोपोलिस, रॉयल जेली, पराग, मौनी विष आदि की प्राप्ति होती है, इसके साथ ही मधुमक्खियों से फूलों में परागण होने की वजह से फसलों का उत्पादन लगभग ¼ (एक चौथाई) अतिरिक्त रूप से बढ़ जाता है। जब फ्लोरा पर्याप्त मात्रा में रहता है उदाहरण के तौर पर जब सरसों के फूल आते हैं तब 1 एकड़ में सरसों के खेत में 50 बॉक्स रख सकते हैं परंतु जब फ्लोरा कम होता है तब 1 एकड़ में 5 से 10 बॉक्स रखे जाते हैं मधुमक्खी अपने फ्लोरा के लिए बॉक्स से डेढ़ किलोमीटर दूर तक चारों दिशाओं में जाती है यदि क्षेत्र विशेष में फ्लोरा कम होगा तो माइग्रेशन की प्रक्रिया की जाती है जिससे कि शहद उत्पादन पर कोई प्रतिकूल प्रभाव न पड़ सके।

मधुमक्खी पालन लोन योजना: मधुमक्खी पालन योजना केंद्र सरकार द्वारा शुरू की गयी एक महत्वपूर्ण योजना है | सरकार द्वारा इस योजना को लांच करनें का मुख्य उद्देश्य देश के किसानों को साथ ही बेरोजगार लोगो को मधुमक्खी पालन की तरफ प्रोत्साहित करना है। मधुमक्खी पालन व्यवसाय करनें वाले लोगो को इस कार्य के लिए वित्तीय सहायता सरकार द्वारा लोन के रूप में प्रदान की जाती है, इसके साथ ही लोन पर सब्सिडी भी दी जाती है|

मधुमक्खी पालन में लागत की गणना ऋण और सब्सिडी: व्यावसायिक तौर पर मधुमक्खी पालन के 50 बॉक्स के लिए दो से ढ़ाई लाख रुपए तक का खर्च आता है जिसमें 50-60% सब्सिडी सरकार के द्वारा दी जाती है जिसकों मधुमक्खी पालक अपने जिले के उद्यानिकी विभाग से संपर्क करके प्राप्त कर सकता है लकड़ी के बने बॉक्स, हाथों के दस्ताने, रानी मक्खी, खुली भूमि, शहद एकत्रित मशीन आदि उपकरणों की आवश्यकता होती है| आठ फ्रेम वाले लकड़ी के एक बॉक्स की कीमत 600 से 800 तक मधुमक्खी की कॉलोनी सहित बॉक्स की कीमत 3500 से 6000 तक होती है सामान्यतः अप्रैल से सितंबर के महीने में जब मधुमक्खी के लिए फ्लोरा कम मात्रा में उपलब्ध होता है तब इसकी कीमत कम होती है 1 अक्टूबर से मार्च तक जब फ्लोरा की मात्रा पर्याप्त रहती है तब कीमत अधिक होती है यदि यह बॉक्स इस योजना के अंतर्गत खरीदते हैं तो एक बॉक्स पर 75% का अनुदान मिलता है एक व्यक्ति 150 से 200 बक्से की देखरेख कर सकता है शहद की प्रोसेसिंग पर 15 प्रति किलो एक पैकेजिंग पर 40 प्रति किलो का खर्च आता है।

मधुमक्खी पालन लोन योजना में आवेदन कैसे करे : मधुमक्खी पालन लोन योजना में आवेदन करनें के लिए सबसे पहले आपको राष्ट्रीय मधुमक्खी पालन एवं शहद मिशन की ऑफिशियल वेबसाइट पर जाना होगा| होम पेज पर आपको मधुमक्खी पालन लोन योजना के लिंक पर क्लिक करना होगा | एक एप्लीकेशन फॉर्म ओपन होगा, जिसे आपको डाउनलोड करना होगा। एप्लीकेशन फॉर्म को ध्यानपूर्वक भरनें के पश्चात अपने नजदीकी मधुमक्खी पालन केंद्र में जमा करना होगा। यदि आप विभाग के द्वारा इस व्यवसाय के लिए चयनित कर लिए जाते है, तो आपको इस योजना के तहत प्रशिक्षण और अपना व्यवसाय शुरू करने के लिए ऋण प्रदान किया जायेगा।